श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - २

जुलाई-.२०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. जैन ध्वज का बहुमान याने ..... का बहुमान है।
२. श्री ऋषभदेव प्रभु के शासन की रक्षा के लिये गौमुख यक्ष और ..... यक्षिणी की स्थापना हुई।
३. जीव जहाँ उत्पन्न होता है वहां प्रथम ..... ग्रहण करने का काम करता है।
४. जयणा की और ..... की विचारणा हृदय को ज्यादा से ज्यादा कोमल बनाती है।
५. अर्थ और काम पुरुषार्थ पर धर्म का ..... होना चाहिये।
६. पाँच समिती और तीन गुप्ति मिलकर ..... है।
७. जैन दर्शन में ..... को पंच परमेष्ठी का सार माना जाता है।
८. आजकल ..... का गुण ही गायब होते जा रहा है।
९. अग्नि ..... है इसके संपर्क में जो आवे उसे जला कर राख कर दे।
१०. जीवन में आगे बढना हो तो हमारे जीवन बगिया से ..... चुन चुन कर दूर करने होंगे।
११. ..... याने हठाग्रह, कदाग्रह, दुराग्रह।
१२. जीव से ..... बनने की यात्रा का सुंदर मार्ग नवतत्व में दर्शाया गया है।
१३. जिनके समीप निवास करने से श्रुतज्ञान का लाभ होता है वो ..... कहलाते है।
१४. उचित विवाह सुखी और शांति पूर्ण जीवन की ..... समान है।
१५. विशेषता से आत्मा को क्रिया में प्रेरे वह ..... है।
१६. वस्त्र तो ..... के लिये नहीं है, वस्त्र तो अंगो को ढँकने के लिये है।
१७. कुछ साधारण वनस्पतिकाय के सेवन से प्रकृति ..... बनती है।
१८. लोभ को जीतने के लिये ..... करना सीखना चाहिये।
१९. मातृ देवो भव, पितृ देवो भव यह ..... की अनोखी देन है।
२०. जिनेश्वर परमात्मा के शासन में ..... की पूजा नहीं है, वे तो गुणों के पूजक हैं।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. हमारी जिव्हा को अपवित्र कौन बनाता है ?
२. निर्वद्य, पाप रहित वचन बोलना यह कौन से समिती है ?
३. श्रावक की कुलदेवी कौन है ?
४. प्रभु श्री ऋषभदेव के प्रथम गणधर कौन थे ?
५. छोडने जैसा क्या है ?
६. इच्छा निरोध कौन सा तप है ?
७. जीवन का शृंगार क्या ?
८. शंख इल्ली कृमि कौन से जीव कहलाते है ?
९. अर्णिकाचार्य के गंगा नदी पार करते कौनसी देवी ने उपसर्ग किया ?
१०. सर्व रोगों का मूल कौन है ?
११. वैभव कैसा होना चाहिये ?
१२. साधु मुनिराज के सत्तावीस गुणों में पाँचवा गुण कौनसा ?
१३. पानी की अेक बूंद में कितने जीव है ?
१४. नमि और विनमि की भक्ति देखकर कौन प्रसन्न हुआ ?
१५. सोमयशा के पिताश्री का नाम क्या ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. जावणिज्जाअे २) मद ३) कणग ४) दुहा ५) तवो ६) पाण ७) अपजत्ता ८) सग ९) गलोय
१०. उवओगो ११. पत्तेआ १२) विज्जु १३) मंडलि १४) नाणं १५) चरण सितरी १६) खमासमणो
१७) किसलय १८) विगला १९) जियठ्ठाणा २०) अल्लयतिय

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) जिव्हा	१) देवतुल्य	६) अतिथी	६) आचार्य भगवन्त
२) सौधर्मेन्द्र	२) सन्यासी	७) काम-क्रोध-मान	७) सात क्षेत्र
३) सोनु-रुपु	३) कलेवर	८) अविरति	८) आंतर शत्रु
४) गच्छ ना नायक	४) परपरिवाद	९) दस सोनामोहर	९) दाहिनी दाढा
५) चंद पन्नति	५) चारित्र	१०) संपति	१०) उपांग

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. पर्याप्ति कितनी हैं ?
२. मद कितने प्रकार के हैं ?
३. आचार्य भगवंत कितने गुणों से युक्त है ?
४. व्यसन कितने ?
५. धरणेन्द्र ने नमि-विनमि को कितनी विद्याये दी ?
६. कषाय कितने प्रकार के हैं ?
७. उपागं कितने हैं ?
८. राजा ने किले नी नींव में कितनी सोनामोहर डाली ?
९. संस्कृत में ओम कितने अक्षर का बना हुआ है ?
१०. भरत राजा के पुत्र ऋषभसेन ने कितने बंधुओ के साथ दीक्षा ली ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. काया से हो सके उतनी ही प्रवृति करना काय गुप्ति है ।
२. चमरेंद्र ने उपर की दायीं दाढा ली ।
३. दर्शन ये भी जीव का लक्षण है ।
४. पंखे से हवा करते समय तेउकाय की विराधना होती है ।
५. अपने जीवन में उचित वेष का त्याग कर उद्‌भट वेष का परिधान करना चाहिये ।
६. उपद्रव युक्त स्थानों में अच्छे व्यक्तिओं का संग दुर्लभ होता है ।
७. वस्तु के सामान्य धर्म को जानने की जीव की शक्ति वह ज्ञान है ।
८. दान तो वही कर सकता है जिसके जीवन में भोग मर्यादित हो ।
९. इन्द्रियों का गुलाम कभी भी संतुष्ट नहीं होता ।
१०. जीव जिससे जीता है, वो प्राण कहलाता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. भोजन का समय भी नियमित एक ही समय होना चाहिये ।
२. हम अनादि काल से सच्ची दृष्टि के बिना ही इस संसार में भ्रमण कर रहे हैं ।
३. जीव हो वहाँ चारित्र होता है और चारित्र होता है वहाँ जीव होता है ।
४. मानव मात्र को जीवन निर्वाह के लिये संपति होना अनिवार्य है ।
५. जिस क्रिया अथवा नियमों के अनुसरण से सम्यक् चारित्र की वृद्धि हो ।
६. शास्त्र कहते हैं कि सुई के अग्रभाग जितने साधारण वनस्पतिकाय में अनंत जीव हैं ।
७. लोग बहुत भक्तिवाले थे परंतु अज्ञानी थे ।
८. धर्मक्षेत्र एवं विद्याभ्यास के क्षेत्रों की सविशेष मर्यादा पालन में ही हमारा सबका हित समाविष्ट है ।
९. शुभ चिंतन आत्मा के शुद्ध चिंतन में परिणमित हुआ ।
१०. संवेग निर्वेद युक्त देशना सुनकर भरत महाराजा के पुत्र ऋषभसेन को वैराग्य हुआ ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. उचित विवाह २) शरीर तथा मन पर्याप्ति ३) ओम
४. धर्मचक्र तीर्थ ५) साधारण वनस्पतिकाय अभक्ष्य क्यों ? समझाओ ।

શત્રુંજય એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર,
સ્ટેસન રોડ, ચાળીસગામ – ૪૨૪૧૦૧.
જી. જળગામ. મો. ૯૦૨૮૨૪૨૪૮૪